हिन्दी साहित्य में विद्यापति का स्थान और महत्व :-

कवि कोकिल विद्यापति हिन्दी-साहित्य के देदीप्यमान नक्षत्र हैं। हिन्दी साहित्य में इनका वही स्थान है जो अंग्रेजी साहित्य में शेक्सपीयर और मिल्टन का है, संस्कृत साहित्य में वाल्मीकि और कालिदास का है - बंगला साहित्य में टैगोर का है। विद्यापति ने संस्कृत, अवहट्ट और मैथिली में रचनाएँ की है, ये मिथिला के राजा कीर्तिसिंह और शिवसिंह के दरबारी कवि थे। संस्कृत में भू-परिक्रमा, पुरुष-परीक्षा, दुर्गाभक्तितरंगिनी, गंगावाक्यावली - दानवाक्यावली और लिखनावली प्रमुख है। अवहट्ट में कीर्तिलता और कीर्तिपताका तथा मैथिली भाषा में पदावली का अग्रस्थ स्थान है। हिन्दी-साहित्य में विद्यापति की पहचान और प्रतिष्ठा का आधार 'पदावली' है, जिसमें कवि ने भक्ति और श्रृंगार की अविरल धारा प्रवाहित की है, वे एक ओर पंचदेवोपासना हेतु पद-निर्माण करते है, तो दूसरी ओर हिन्दी में नख-शिख सौन्दर्य की परंपरा का प्रवर्तन करते हैं।

साहित्याभिरूचि की परंपरा को खंडित होकर बचाने से विद्यापति का योगदान बेजोड़ है। साहित्याभिरूचि के क्षेत्र में विद्यापति हिन्दी के आदि-कवि सिद्ध होते हैं, संस्कृत, प्राकृत की अभिरुचि का नूतन आविष्कार

2

विद्यापति की रचनाएँ है। हिन्दी साहित्य के आदिकाल में अभिरुचि को प्रामाणिक रूप प्रदान लाने का पूरा दायित्व विद्यापती ने ही सँभाला है, परंपरा से चली आ रही साहित्याभिरुचि का दामन पकड़कर हिन्दी - साहित्य जगत को एक विशेष गरिमा विद्यापती ने प्रदान की है। हिन्दी साहित्य के माध्यम से अभिरुचि को एक नया आयाम इन्होंने दिया है, और अभिरुचि के लिए नयी भाषा का स्वीकार किया है। नयी भाषा से तात्पर्य है, नयी - नयी कठिनाइयाँ, चुनताओं का अनुभव दे देना। भले ही हिन्दी साहित्याभिरुचि में भाषा परिवर्तन के कारण गँठजोड़ का कार्य पूर्ण रूप में सफल न हुआ हो, फिर भी साहित्याभिरुचि की दृष्टि से विद्यापति हिन्दी जगत के उन्नायक कवि सिद्ध होते हैं।

विद्यापती कीर्तिलता में सामाजिक और साहित्यिक परंपरा का समर्थन करते हैं तो पदावली में उसे तोड़ते हैं — राधा - कृष्ण के मांसल, मादक तथा मुक्त शृंगार चित्रों के द्वारा, राधा - कृष्ण के [illegible] नाम पर सामाजिक मर्यादाओं की तोड़ - फोड़ ठीक न मानकर बहुत से लोगों ने उन्हें भक्तकवि कह डाला है। हजारी प्रसाद द्विवेदी पदावली की चर्चा भक्तकवियों के प्रसंग में करते है,

के भक्ति के प्रसंग में विद्यापति को भुला देने के लिए चालू बातें करते हैं।

रामचंद्र शुक्ल ने अपने इतिहास में पहले ही कह दिए थे " विद्यापति को कृष्णभक्तों की परंपरा में न रखना चाहिए जो लोग विद्यापति को आध्यात्मिक दृष्टि से देखना चाहते हैं, उन्हें आड़े हाथों लेते हुए वे लिखते हैं — " आजकल आध्यात्मिक रंग के चश्मे बहुत सस्ते हो गए हैं. उन्हें चढ़ाकर कुछ लोगों ने गीतगोविन्द को आध्यात्मिक संकेत बताया है वैसे ही विद्यापति के इन पदों को भी। विद्यापति श्रृंगारिक कवि हैं या भक्त कवि को लेकर एक विवाद उठ खड़ा हुआ और वह अब भी बंद नहीं हुआ। शुक्ल जी के पहले ग्रियर्सन विद्यापति को रहस्यवादी कह चुके हैं, उनके अनुसार राधा जीवात्मा है और कृष्ण परमात्मा।

विद्यापति का प्रेम न तो रीतिकवियों की तरह वासनामय है और न भक्तों की तरह दिव्य, वे अपरूप के कवि हैं, राधा का अपरूप रूप कामदेव के लिए मंगलदाता है। अपरूप रूप कामदेव के लिए मंगलदाता है। 'मनोभव मंगल' का अर्थ अत्यंत रूपवती ... 'मनोभव मंगल' का अर्थ अत्यंत रूपवती

ए सखि देखल एक अपरूप।
सुनइत मानबि सपन सरूप।।

वे नख - शिख, दूती-प्रसंग, अभिसार आदि का पारंपरिक ढंग से वर्णन करते हैं, स्वतंत्र सौंदर्य वर्णन में

Scanned with CamScanner

वे दो अत्यंत उत्तेजक और यौनोपादानों को रेखांकित करते हैं। ये उपादान हैं – ओठ और पयोधर।

बड़ लालस हुए रहे —, बिनल कन्हाई लोचन आगे,

संयोग-प्रसंग में विद्यापति का मन प्रथम समागम में पूरी तरह रमता है, इस अवसर पर कामदेव की कुसुमा देखते ही बनती है। नायक-नायिका को वैसे ही मसलता है जैसे मस्त हाथी कली को। कभी-कभी नायिका अपने समागम का वर्णन इस तरह भोले ढंग से करती है —

हँसि हँसि बहु आलिंगन देल,
मनमथ अंकुर कुसुमित भेल।।

विद्यापति के विरह में अद्भुत संयम है। संयोग-वर्णन के घनीभूत बादलों का उद्दाम आवेग आखिरी बूँद तक बरसाकर रिक्त हो गया है। कृष्ण कल आने के लिए कहकर मथुरा चले गए हैं। हर प्रातः राधिका पूछती हैं कि वह कल कब आएगा —

कालिक अवधि करिअ पिय गेल। लिखइते
कालि भीति भरि गेल।।

यद्यपि विद्यापति पर शृंगारिक कवि का मोहर मार दिया गया है, तथापि उनकी पंचदेवोपासना (शिव, दुर्गा, माधव, गंगा और काली) में लिखी गई पद-रचना कम हृदय-स्पर्शी नहीं है।

Scanned with CamScanner

मैथिली की मिठास, लोकधुनों का समावेशन, तन्मय करने की क्षमता के कारण विद्यापति की पदावली आज भी लोकप्रिय है और कल भी रहेगी। भक्तिकाल के कबीर, तुलसी, सूर और जायसी, रीतिकाल के केशव और घनानंद, आधुनिक काल के प्रसाद, पंत, निराला और महादेवी सहित तमाम हिन्दी कवियों से होड़ करता हुआ विद्यापति आजतक हिन्दी काव्य-जगत में अपना अन्यतम स्थान बनाए है।

प्रो० रौशन कुमार
हिंदी विभाग
के० के० कॉलेज/[illegible]

Scanned with CamScanner